द्वितीय अध्याय

श्री मालवीय जी का प्रारम्भिक जीवन परिचय

अ) पारिवारिक पृष्ठभूमि

ब) प्रारम्भिक जीवन

स) सफल शिक्षक के रूप में श्री मालवीय जी

Estelar

श्री मालवीय जी का प्रारम्भिक जीवन परिचय

अ) पारिवारिक पृष्ठभूमिः-

मालवीय का आशय मालव क्षेत्र का रहने वाला है। मालव मध्य प्रदेश के अन्तर्गत आने वाला एक छोटा सा क्षेत्र है। परन्तु मालव जी का परिवार मालव क्षेत्र का रहने वाला नहीं था। उनके पूर्वज मालव के रहने वाला अवश्य थे। मालवीय जी के पूवर्ज गौड़ ब्राह्मण थे।[1] मालवीय जी के पूवर्ज अपने पाण्डित्य, विद्वता, धर्मनिष्ठा, भक्ति तथा आचार–विचार के लिए प्रसिद्ध थे। मालव क्षेत्र में किसी मुस्लिम शासक का शासन था। जिसके अधीन बहुत से हिन्दू राजा अपनी जागीरों पर पूर्ण अधिकार जमाये हुए थे। इन्हीं में से किसी शासक की जागीर में कुछ गौड़ ब्राह्मण रहते थे। किसी कारणवश राजा इनसे रूष्ट हो गया। इन्होनें दण्ड से बचने के लिए अपना पैतृक स्थान छोड़ दिया और विभिन्न स्थानों को चले गये। इनमें से कुछ पटना भी पहुँचे। उन पटना जाने वालो में मालवीय जी के पूवर्ज भी थे जो कालान्तर में प्रयाग आकर बस गये। प्रयाग आये कुछ परिवार

Estelar

बढ़कर अब सहस्त्रों की संख्या में हो गये हैं। यह वंश अपनी स्वाभाविक उदारता, साहसिक धर्मनिष्ठा और परंपरागत विद्वान के लिए प्रसिद्ध है।[2]

ये ब्राह्मण परिवार मूलतः मालवा के निवासी[3] थे। अतः क्षेत्रीय भाषा में इनका परिवार मल्लई[4] अथवा मालवी कहा जाने लगा। कालान्तर में ही इसका परिष्कृत रूप मालवीय बना। इन्होंने अपनी आजीविका का साधन ब्राह्मणवृत्ति को बनाया, नौकरी एवं व्यापार नहीं ली।

पण्डित मदन मोहन मालवीय की वंशावली को अग्र प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

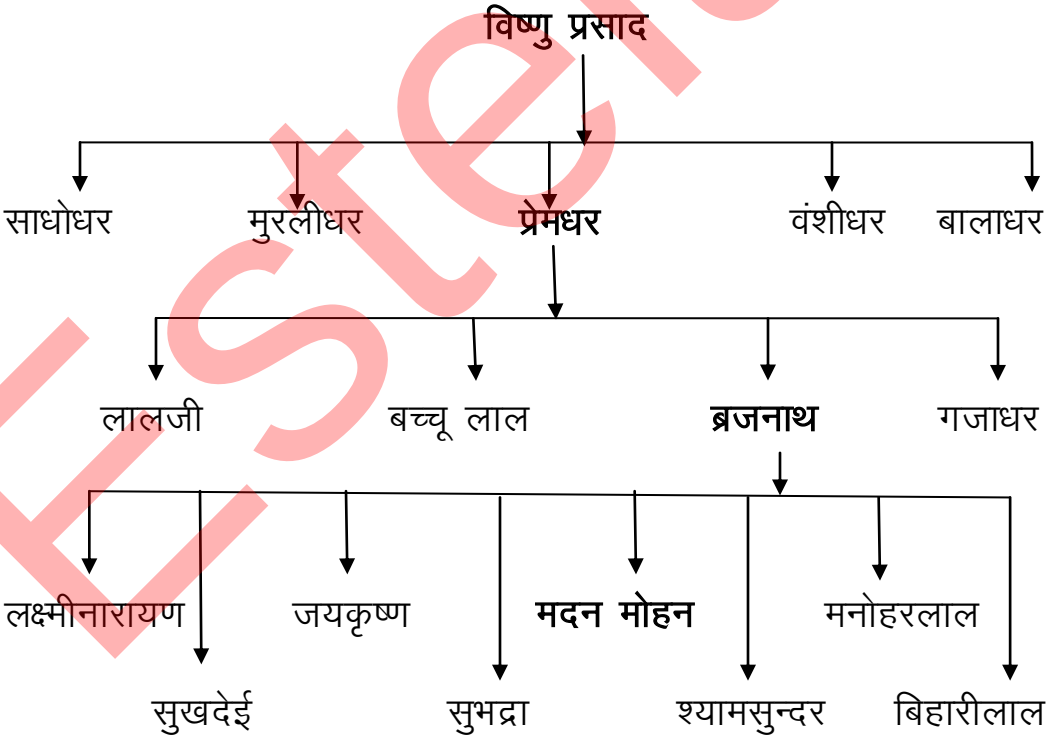

महामना मदन मोहन मालवीय जी के पूर्वज संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान एवं धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। श्री विष्णु प्रसाद से प्रयाग में इनकी वंशावली की शुरूआत होती है। ये मालवीय जी के परदादा थे। इनके पाँच पुत्र थे– प्रेमधर, साधोधर, मुरलीधर, वंशीधर, बालाधर थे। ये सभी

Estelar

प्रतिभाशाली थे। पण्डित साधोधरजी वैयाकरणी थे। पण्डित मुरलीधर ने साधु का जीवन व्यतीत किया। पण्डित वंशीधर संस्कृत साहित्य के विद्वान थे। पण्डित बालाधर उच्चकोटि के ज्योतिषी थे।[5] महामना जी के पितामह पण्डित प्रेमधर संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। धर्म के प्रति उनकी बड़ी निष्ठा थी। वे श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। उनके पास दो फुट ऊँची सांवले रंग की श्रीकृष्ण की एक मूर्ति थी, जिसकी वे प्रतिदिन नियमित रूप से पूजा करते थे। अपनी विद्वता व निष्ठा के कारण वे 'महाभागवत'[6] के नाम से प्रसिद्ध थे। चौरासी वर्ष की आयु में वे गंगातट पर स्वेच्छा से जा कर, स्नान–ध्यान करके, पद्मासन लगाकर इह–लीला समाप्त कर, स्वर्गलोक सिधार गये। पितामही भी पितामह की तरह ही धर्मनिष्ठा व शील–सम्पन्ना थी।

पण्डित प्रेमधर के चार पुत्र लालजी, बच्चू लाल, गदाधर और ब्रजनाथ थे। अपने पिता के कनिष्ठ पुत्र पण्डित ब्रजनाथ महामना मालवीय के पिता थे। ब्रजनाथ जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे।[7] इन्हें ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था। उनका रूपरंग सुन्दर, कंठ मधुर, स्वभाव बहुत कोमल था। इन्होंने चौबीस वर्ष की उम्र में श्रीमद्भगवत गीता की व्याख्या लिख दी थी।[8] इन्होंने बहुत कम उम्र में प्रसिद्ध कथावाचक की उपलब्धि प्राप्त कर ली थी। इनकी कथाओं में अपार जनसमूह एकत्रित हो जाता था। इनकी कथाओं को सुनने के लिए जनसामान्य के अलावा दूर–2 के राजा महाराजा भी आया करते थे। इनमें काशी, रीवां और दरभंगा के महाराज प्रमुख थे। उन्होंने भक्ति प्रतिपादक 'सिद्धान्त दर्पण' नामक ग्रन्थ भी लिखा था, जिसे उनके पुत्र मदन मोहन ने 1906 में प्रकाशित कराया।[9]

प्रसिद्ध कथावाचक[10] और ज्योतिषी होने के साथ ही उनके स्वाभिमान की ख्याति प्रसिद्ध थी। वे सन्तोषी, सदाचारी तथा आचार–नियम

Estelar

के पक्के थे। संगीत में उनकी विशेष रूचि थी। वे बाँसुरी बहुत ही अच्छी बजाते थे।[11] वे निस्वार्थ व्यक्ति थे। लालच उन्हें छू भी नहीं सका था। इसका प्रमाण यह है कि वे कभी किसी राजा के संरक्षण में नहीं गये। उन्हें तो पूजा की सेवा में ही सन्तोष प्राप्त हो जाता था। उन्होंने विपन्नता[12] में ही संतोषपूर्वक दिन गुजारे परन्तु किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया। अभाव के इन संस्कारों ने मदनमोहन मालवीय को जीवन–संघर्ष में निरन्तर सक्रिय बने रहने की प्रेरणा दी।[13]

पण्डित ब्रजनाथ का विवाह मिर्जापुर जिले के शहजादपुर ग्राम की मूनादेवी से हुआ।[14] मूनादेवी स्वभाव की सरल तथा हृदय की कोमल महिला थी। वे दुखियों को देखकर अत्यन्त द्रवित हो जाती तथा तत्काल सेवा करतीं। बच्चों से उन्हें विशेष स्नेह था। मोहल्ले के बच्चे उन्हें घेरे रहते थे। साथ ही वे अत्यन्त कार्यकुशल थी, घर का समस्त प्रबन्ध उनकी ही जिम्मे था। मूनादेवी ने छः पुत्र व दो कन्याओं[15] को जन्म दिया। महामना मदन मोहन मालवीय अपने माता–पिता की पाँचवी सन्तान थे।[16] उनके अन्य भाई बहन लक्ष्मीनारायण, सुखदेई, जयकृष्ण, सुभद्रा, श्यामसुन्दर, मनोहरलाल तथा बिहारीलाल थे। महामना जी का जन्म एक आर्शीवाद का प्रतिफल था जो भविष्य में शत–प्रतिशत सही सिद्ध हुआ। इनके जन्म के विषय में एक रोचक कथा प्रसिद्ध है। कहते हैं कि ब्रजनाथ जी अपने पितरों का श्राद्ध करने के लिए तीर्थ गये हुए थे। श्राद्ध विधिपूर्वक सम्पन्न होने के पश्चात् एक विद्वान पुरोहित ने कहा, ''आपने पूर्ण श्रद्धा से अपने पितरों को संतुष्ट किया है। अब आप कहिए, आप क्या आर्शीवाद चाहते हैं? ईश्वर आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण करेंगे।'' प0 ब्रजनाथ जी ने कहा, ''मैं ऐसा पुत्र चाहता हूँ, जैसा न पहले कभी किसी के यहाँ हुआ और न भविष्य में होगा।'' पुरोहित जी ने तथास्तु कह दिया।

Estelar

आर्शीवाद के फलस्वरूप 25 दिसम्बर 1861, तद्नुसार विक्रम संवत् 1918, पौष कृष्णा 8 बुधवार सांयकाल 6 बजकर 54 मिनट पर हुआ।[17] 25 दिसम्बर ईसा मसीह का भी जन्म दिवस (बड़ा दिन)[18] माना जाता है। बालक का इस दिन जन्म लेना ही भाग्योदय का चिन्ह माना गया। इनके जन्म की सूचना दाई ने ब्रजनाथ जी को दी कि आपके घर 'कानी कन्या' का जन्म हुआ है। 'कानी कन्या' एक मुहावरा है। यदि किसी के घर में पुत्र का जन्म हो तो सीधी प्रकार से नहीं बताया जाता है कि पुत्र उत्पन्न हुआ है क्योंकि पुत्रोत्पत्ति की बात सुनकर न जाने पुत्र का किसकी नजर लग जाए। इसीलिए दाई द्वारा सूचित किया जाता है कि 'कानी कन्या' का जन्म हुआ है। इसे पुत्रोत्पत्ति का संकेत समझा जाता है।

मालवीय जी का परिवार रूढ़िवादी[19] एवं संयुक्त परिवार था। उनका घर प्रयाग के अहियापुर मोहल्ले में था।[20] घर के बीच में आंगन था। उसके चारों ओर कोठरियां थी। एक कमरे में राधा–कृष्ण की मूर्ति विराजती थी। एक गाय भी थी जिसकी सानी–पानी का प्रबन्ध मालवीय जी की माता करती थीं। घर का कार्य परिवार के सदस्यों के द्वारा ही किया जाता था।

मालवीय जी के पिता प0 ब्रजनाथ जी 77 वर्ष की आयु में इस दुनिया को छोड़कर चले गये थे। महामना जी से दो बड़े भाई व दो बड़ी बहनें थी। सबसे बड़े भाई लक्ष्मीनारायण थे जिन्होंने महाजनी का कार्य सीखने के पश्चात् अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया। जब ये 51 वर्ष के थे, तब बद्रीनाथ धाम की यात्रा पर गये। यात्रा के दौरान इन्हें संग्रहणी रोग लग गया जो इनके लिए प्राणघातक सिद्ध हुआ। बड़ी बहन सुखदेई का विवाह मिर्जापुर में हुआ था परन्तु ये अल्पावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हो गयी।[21] दूसरे बड़े भाई जयकृष्ण ने संस्कृत व अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त कर रेलवे में

Estelar

नौकरी की। वे कुश्ती के शौकीन होने के साथ–2 अच्छे सितारवादक भी थे। यह दुर्भाग्य ही है कि 51 वर्ष की अल्पायु में उनकी भी लीला समाप्त हो गयी। दूसरी बड़ी बहन सुभद्रा बहुत ही अल्पायु में विधवा हो गयी।

मालवीय जी के छोटे भाई श्यामसुन्दर ने अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त कर 25 वर्ष की अवस्था में बोर्ड ऑफ रेवन्यू में नौकरी प्राप्त कर ली थी। वे अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् भगवत भजन में लीन रहे। श्यामसुन्दर से छोटे भाई मनोहरलाल ने भी संस्कृत व अंगेजी की शिक्षा प्राप्त की। परन्तु इन्हें दीर्घायु जीवन प्राप्त नहीं हो सका। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही इनका आकस्मिक निधन हो गया। सबसे छोटे भाई बिहारीलाल भी अपने समय के सफलतम ठेकेदारों में एक थे। परन्तु ये भी दीर्घायु नहीं हुए। सन् 1921 में संग्रहणी रोग के कारण इनकी जीवनलीला समाप्त हो गयी।

इस प्रकार प0 ब्रजनाथ की आठ सन्तानों[22] में से केवल महामना मालवीय को दीर्घायु होने के साथ–2 संसार में व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त की। वे मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक गुणों से परिपूर्ण थे। उनकी वाणी अत्यन्त मधुर थी तथा सत्यता, तत्परता और सच्चरित्रता उनके विशेष गुण थे। शरीर अत्यन्त सुगठित और शक्तिशाली था। सुन्दर गोरा, चिट्टा रंग और सुगठित शरीर उनके व्यक्तित्व को एक महान् आकर्षण प्रदान करता था।[23] वह एक देशभक्त, समाज सुधारक, वकील, राजनीतिज्ञ तथा शिक्षाशास्त्री सिद्ध हुए।

Estelar

सन्दर्भ:-

1. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 11, डायमंड पॉकेट बुक्स नई दिल्ली, वर्ष 2008

2. शर्मा, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद, चरित्र कोष, पृष्ठ 346, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष 1983

3. चतुरसेन, आचार्य, भारत रत्न, पृष्ठ 28, विज्ञान प्रगति प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2013

4. सिंह, डॉ. राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 42, कुमार एण्ड सन्स, वर्ष 2012

5. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीयः जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 32, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

6. पूर्वोक्त, पृष्ठ 26

7. शर्मा, विश्वमित्र, भारत रत्न, पृष्ठ 254, शिक्षा भारती दिल्ली, वर्ष 2015

8. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 15, डायमंड पॉकेट बुक्स नई दिल्ली, वर्ष 2008

9. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीयः जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 27, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

10.http://www.dnaindia.com/india/report-all-you-need-to-know-about-madan-mohan-malaviya-2046675

11. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीयः जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 27, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

12.http://www.14gaam.com/history-and-biography-of-pandit-madan-mohan -malaviya.htm

13. मिश्र, राजेन्द्र एवं तिवारी, प्रहलाद, विश्व के शिक्षाशास्त्री, पृष्ठ 262, कृतिका बुक्स दिल्ली, वर्ष 2009

14. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 21, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, वर्ष 2006

Estelar

15. http://www.mahamana.org/biography-.html

16. मित्तल, डॉ0 महेन्द्र, आधुनिक भारत के महानतम भारतीय, पृष्ठ 16, ग्लोबल हारमनी पब्लिशर्स, वर्ष 2011

17. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 1, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,, वर्ष 1989

18. शर्मा, विश्वमित्र, बीसवीं सदी के 100 प्रसिद्ध भारतीय, पृष्ठ 26, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, वर्ष 2007

19. Sharma, Anuradha, Indian freedom fighters, Page 169, Kumar Publication House, Year 2013

20. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 1, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,, वर्ष 1989

21. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 13, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, वर्ष 2006

22.http://www.iloveindia.com/indian-heroes/madan-mohan-malviya-biography. html

23. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 67, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996

Estelar

श्री मालवीय जी का प्रारम्भिक जीवन परिचय

ब) प्रारम्भिक जीवनः-

पण्डित ब्रजनाथ ज्यादा पढ़े–लिखे नहीं थे। परन्तु वे शिक्षा का महत्व भली प्रकार जानते थे। इन्होंने अपनी सभी सन्तानों को उचित शिक्षा दी। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा की अनिवार्यता को समझने के साथ–2 संस्कृत की अनिवार्यता को नजरअन्दाज नहीं किया। ब्रजनाथ जी ने अपने सामर्थ्य के अनुसार अपने सभी पुत्रों को शिक्षा दिलाने का यत्न किया। इनका मानना था कि बालक को विद्यालय भेजने से पूर्व अक्षर ज्ञान घर पर ही दे देना चाहिए। पण्डित जी संस्कार शिक्षा का प्रारम्भिक स्थान भी घर को ही मानते थे। इसीलिए इन्होंने अपने बच्चों को विद्यालय भेजने से पूर्व घर पर ही अक्षर ज्ञान कराने के साथ–2 विभिन्न श्लोक, भजन व स्त्रोत कण्ठस्थ करा दिए थे। आगे चलकर पं. मदन मोहन मालवीय जो कुछ बने उसकी नींव बचपन में ही पड़ चुकी थी।[1]

बालक मदन मोहन बचपन से ही सुन्दर और चंचल थे। एक बार, चार साल की अवस्था में, वे छत पर चढ़ गये। खेलते हुए छत से आंगन पर गिर गये तथा बेहोश हो गये। यह देखकर उनकी माँ बहुत घबरा गयी तथा आर्तनाद कर रो उठीं। इस समय उनके पिता ब्रजनाथ प्रभु

Estelar

की उपासना में बैठे हुए थे। घबराई हुई माँ ने पिता जी से कहा– ''तुम पूजा में बैठे हो और बच्चा यहां बेहोश पड़ा है।'' पं0 ब्रजनाथ ने शान्त भाव से आचमन किया तथा तुरन्त बाहर आ गये। उन्होंने बालक के मुख में एक चम्मच चरणामृत दिया और कहा–''कोई चिन्ता नहीं।'' पिता का इतना कहना था कि बालक ने धीरे–2 आँखें खोल दीं। इस प्रकार परिवार का शोक भरा वातावरण प्रसन्नता के वातावरण में परिवर्तित हो गया।[2]

कुशाग्र बुद्धि व तीव्र स्मृति के धनी मालवीय जी ने घर पर ही अपने बाबा और पिता से संस्कृत पढ़ी थी[3] और उनको बाल्यकाल से अनेक स्त्रोत व गीत कण्ठस्थ हो गये थे। उस समय याद किये गये श्लोक मालवीयजी को आजन्म याद रहे।[4] इसके पश्चात् पांच वर्ष की अवस्था में[5] पहाड़ा पढ़ने के लिए महाजनी पाठशाला में गये।[6] तदुपरान्त महामना जी को मुहल्ले के ही आचार्य हरिदेव की श्रीमदक्षर नामक पाठशाला में प्रविष्ट करा दिया।[7] पाठशाला में दाखिले के समय पण्डित हरदेव ने बालक मदनमोहन से पूछा, ''क्या कोई श्लोक याद है?'' बालक ने कहा– ''हाँ।'' बालक ने अपने पिता के द्वारा सिखाए हुए सुन्दर श्लोकों को सुनाना प्रारम्भ कर दिया। श्लोक सुनकर पण्डित जी अति प्रसन्न हुए।[8] कालान्तर में यह पाठशाला 'श्री धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला'[9] के नाम से विख्यात हुई। इस पाठशाला में मदन मोहन ने लघु सिद्धान्त कौमुदी पढ़ी। साथ ही भगवद्गीता और मनुस्मृति तथा अन्य ग्रन्थों के चरित्र विषयक श्लोक कण्ठस्थ कराये गये।

मालवीयजी बचपन से ही धार्मिक प्रवृति के थे। सात वर्ष की ही आयु में उन्होंने संगम पर एक समारोह में श्रीमद्भागवत का पाठ किया। इसके एक वर्ष पश्चात्, आठ वर्ष की अवस्था में उन्हें जनेऊ पहनाया

Estelar

गया।[10] पिता पं0 ब्रजनाथ ने पुत्र मदनमोहन को गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी। गायत्री मन्त्र की दीक्षा मिलने पर बालक मदनमोहन ने ब्रह्मचर्य व्रत भी ग्रहण कर लिया।[11] मालवीय जी को गायत्री मन्त्र जपने को शौक लगा। वे कसरत करने के साथ–2 गायत्री मन्त्र का जाप भी करते रहते थे। वे यमुना नदी के तट पर जाते तथा वहां घण्टों बैठकर गायत्री मन्त्र का जाप किया करते थे।

आरम्भिक शिक्षा आचार्य हरिदेव जी की पाठशाला से प्राप्त करने के पश्चात् बालक मालवीय जी को विद्या–धर्म प्रवद्धिनी पाठशाला में भेजा गया। यह विद्यावद्धिनी सभा की ओर से संचालित पाठशाला थी। इसी विद्यालय के एक आचार्य जी पण्डित देवकीनन्दन बालक मदनमोहन से बहुत आकर्षित हुए।[12] उन्होंने बालक मदनमोहन को व्यक्तिगत रूचि लेकर प्रशिक्षित करना शुरू कर दिया। आचार्य देवकीनन्दन ने उन्हें धार्मिक विषय, श्लोक, गीत की शिक्षा देकर मालवीय जी की वाणी के साथ–2 बुद्धि का भी विकास किया। आचार्य देवकीनन्दन बालक मदनमोहन को प्रतिवर्ष माघ मेले में लेकर जाते थे और मंच में खड़ा कर उन्हें विभिन्न धार्मिक विषयों में व्याख्यान देने का अवसर प्रदान करते थे। इस प्रकार 7 वर्ष की अवस्था में ही वह व्याख्यान देने लगे थे।

मालवीयजी बहुत नटखट बालक थे। खेलकूद में खूब भाग लेते थे। स्कूल से आने पर घर में बस्ता एक ओर फेंक देते, जूते दूसरी ओर उतार देते और खेलने निकल जाते। लड़ने–भिड़ने का उनको खूब शौक था। पार्टियां बनाते और लड़ाई–भिड़ाई करते। कबड्डी खेलते, देशी खेल ही बालक मदन को भाते थे। उन्होंने संगठन करने का अभ्यास इसी समय किया। इसके साथ–2 मालवीयजी का ईश्वर पर अटूट विश्वास था। ईश्वर भक्त होने के साथ–2 महामना अपने मातृ–पितृ भक्त थे।

Estelar

मालवीयजी प्रातःकाल अपने माता–पिता के अवश्य दर्शन करते और उनको नमस्कार करते। भागवत, महाभारत और रामायण के एक–एक अध्याय का नित्य पाठ करते थे।[13] तत्कालीन परम्परा के अनुसार बालक मदन मोहन अपने कुल के आचार–विचार का दृढ़ता से पालन करते थे। वे स्कूल का पानी तक नहीं पीते थे। पढ़ाई में मदन मोहन का प्रयास अनुकरणीय था। तीव्र बुद्धि से सम्पन्न मदन मोहन का हर विषय में वर्चस्व था। विद्याध्ययन के साथ वे कुश्ती के भी शौकीन थे। महामना जी को आपराधिक वृत्ति वाले लोगों से चिढ़ थी।[14] उत्साही बाल दल का यह नेता अपने विद्यालय और आस–पडोस के गुंडों तथा शरारती तत्वों से सदा लोहा लउत्साही बाल दल का यह नेता अपने विद्यालय और आस–पडोस के गुंडों तथा शरारती तत्वों से सदा लोहा लेता रहता था। इस बाल–दल में लोक–कल्याण और जन–सेवा की भावना सदैव बलवती थी। वे प्रायः सार्वजनिक सभाओं, मेलों और उत्सवों के अवसरों पर भीड़–भाड़ को भली प्रकार नियंत्रित करने में अपना योगदान देते थे। उन्होंने अपने विद्यालय में 'वाग्वर्धिनी सभा' की सभा की स्थापना भी की थी।[15]

तत्कालीन समय में अंग्रेजी भाषा का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। जिनका बालक अंग्रेजी की एन्ट्रेन्स परीक्षा उत्तीण कर लेता था, उन माता–पिता के लिए यह एक गर्व का विषय होता था। अधिकांश माता–पिता का स्वप्न अपने बालकों को अंग्रेजी शिक्षा दिलाना होता था तथा प्रत्येक बालक अंग्रेजी पाठशाला के प्रति मोह रखता था। यू ंतो मालवीय जी प्रारम्भ से ही हिन्दी और संस्कृत भाषा के प्रेमी थे किन्तु समयानुकूल उन्हें अंग्रेजी भाषा पढ़ने की इच्छा हुई।[16] अंग्रेजी पाठशाला में पढ़ने की इच्छा बालक मदन मोहन ने भी अपने पिता से व्यक्त की। परन्तु प0 ब्रजनाथ के लिए यह कठिन समस्या थी क्योंकि अंग्रेजी शिक्षा व्यय

Estelar

साध्य थी और उनके लिए व्यय जुटा पाना कठिन था। फिर भी ब्रजनाथ जी ने बालक की इच्छा पूर्ण करने का निश्चय किया और अथक प्रयास से बालक को इलाहाबाद जिला स्कूल में दसवीं कक्षा में प्रवेश दिला दिया। उस समय जिला स्कूल घंटाघर चौक पर था।

बालक मदन मोहन ने पूरे मनोयोग से पढ़ाई की और शीघ्र ही कठिन विषयों में महारत हासिल कर ली। मदन मोहन जी पढ़ने में तो तेज थे ही, साथ ही सांस्कृतिक व साहित्यिक क्रियाओं में भी बढ़–चढ़कर भाग लेते थे। इनके हेडमास्टर मि0 गार्डन इनकी वाक्पटुता से बहुत प्रभावित थे, व इन्हें सभी प्रकार से सहयोग देते थे। पं0 ब्रजनाथ का घर काफी छोटा था जिसकी वजह से बालक मदनमोहन को पढ़ने में ध्यान लगाने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता था। इसलिए उन्होंने अपने सहपाठी गंगाप्रसाद जोकि पड़ोसी भी था, के घर जाकर पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। वह रात को वहीं सोते व सुबह उठकर अपने घर आ जाते थे।

इलाहाबाद जिला स्कूल से हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1879 में उत्तीण करने के पश्चात् वे इलाहाबाद के म्योर सेन्ट्रल कॉलेज, जो कि बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया[17], में पढ़ने के इच्छुक थे, परन्तु घर की आर्थिक स्थिति देखकर वह उच्चशिक्षा का विचार त्यागने को विवश थे। पिता ने अपने पुत्र की इच्छा को भांप लिया। उन्होंने मदन मोहन को म्योर सेन्ट्रल कॉलेज में दाखिला दिला दिया[18] । कॉलेज की डेढ़ आना फीस अदा करने के लिए उनकी माता जी को कंगन गिरवी रखना पढ़ा। उस समय यह कॉलेज दरभंगा कैसेल में चलता था। इसके प्राचार्य उन दिनों प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान हैरीसन थे। इस कॉलेज में उन्होंने पढ़ने–लिखने के साथ–साथ सहपाठ्यचारी क्रियाओं में भाग लिया। महाविद्यालय में मदन मोहन की प्रतिभा पूर्ण विकसित होने लगी। कॉलेज में

Estelar

'फ्रेन्ड्स डिबेटिंग सोसाइटी' थी। उसमें महामना ने जब अपनी पहली स्पीच अंग्रेजी में दी, तब उस संस्था के मन्त्री लाला सांवलदास ने, जो बाद में डिप्टी कलक्टर हो गये, उनका उत्साह–वर्द्धन किया। महामना सांवलदास जी को 'उस्ताद' कह कर पुकारते थे।[19] मदन मोहन शिक्षा के साथ संगीत और नाट्यकला में भी विशेष रूचि रखते थे। वह कॉलेज में मंचित नाटकों में अभिनय भी करते थे। मालवीय जी अपनी सुन्दरता और तीखे नैन–नक्श के कारण सदैव महिलाओं का पार्ट किया करते थे। 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' में पोर्शिया तथा 'शकुंतला' में शकुंतला का पार्ट करके उन्होंने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। महाविद्यालय में आने के बाद मदन मोहन को अपनी भाषण कला को विकसित करने के पर्याप्त अवसर मिले। वे वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर भाग लेते थे। उनके वाद–विवाद का विषय केवल साहित्यिक ही नहीं होता था, बल्कि वे देश की सामाजिक समस्याओं पर भी गंभीरतापूर्वक विचार किया करते थे।[20] उन्होंने अपने साथियों को भाषण कला सिखाने के लिए वाद–विवाद समाज की स्थापना की, जिसमें वाद–विवाद करना, भाषण देना और कविता करना विद्यार्थियों को सिखाया जाता था।[21] कॉलेज के प्राचार्य मदनमोहन मालवीय की विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित थे।[22] उन्होंने मदन मोहन को छात्रवृत्ति प्रदान की किन्तु यह अध्ययन के लिए अपर्याप्त थी।[23]

उन दिनों सभी कॉलेज के प्रिंसिपल अंग्रेज ही होते थे क्योंकि इनका उद्देश्य अंग्रेजी शिक्षा के साथ–2 अंग्रेजी संस्कृति का प्रसार करना था। इसी कॉलिज के संस्कृत प्राध्यापक पं. आदित्य राम भट्टाचार्य का इन पर विशेष प्रभाव पड़ा।[24] उन्होंने मदन मोहन की साहित्यिक प्रवृत्ति को समझा तथा संस्कृत के अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया। मदन मोहन पं. आदित्य राम भट्टाचार्य का अत्यधिक सम्मान करते थे। यहां तक कि यदि

Estelar

वे उन्हें कहीं मार्ग में भी मिल जाते तो अपने जूते उतारकर साष्टांग दण्डवत दंडवत् करते थे।[25] पण्डित आदित्यराम भट्टाचार्य के सघन प्रयासों से सन् 1880 में ''हिन्दू समाज'' संघ स्थापित हुआ। मदन मोहन ने इसके स्थापना में सक्रिय योगदान दिया और इसके माध्यम से समाज सुधार के कार्य किये।[26] मदन मोहन के सार्थक प्रयासों से इस समाजसेवी संगठन 'हिन्दू समाज' की क्रियाशीलता में बड़ी तेजी से वृद्धि होने लगी।[27] धीरे–धीरे हिन्दू समाज संघ की प्रसिद्धि अखिल भारतीय रूप को प्राप्त करने के उपरान्त ''केन्द्रीय हिन्दू समाज'' के रूप में प्रकट हुई। इसके अतिरिक्त अपने गुरू पं. आदित्य राम भट्टाचार्य के सान्निध्य में महामना को कलकत्ता में सम्पन्न कांग्रेस के द्वितीय अधिवेशन में सम्मिलित हुए।[28]

मदन मोहन के कॉलेज जीवन के कई घनिष्ठ मित्र बने, जिनमें पं. मोतीलाल नेहरू, स्वामी श्रद्धानन्द और प्रसिद्ध समाजसेवी वकील सुंदरलाल मुख्य थे।[29] पं0 मोतीलाल नेहरू के साथ महामना की दोस्ती दांत काटी दोस्ती थी। दोनों जीवन भर लंगोटिए यार माने जाते रहे।

मालवीय जी की वाक्शक्ति बहुत उन्नत थी। वह किसी भी कठिन विषय पर भाषण देते तो धाराप्रवाह बोलते चले जाते। वह किसी किसी विरोध से नहीं डरते थे। उनका निश्चय दृढ़ व परिपक्व था। उन्हें किसी के अप्रसन्नता या उनकी आलोचना करने से जरा भी विचलन नहीं होता था। मालवीय जी सामाजिक कार्यो में लगे रहते थे। जिसका खामियाजा उन्हें 1883 में बी0ए0 की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के फलस्वरूप सहना पड़ा।[30] किन्तु मालवीय जी ने पुनः अगले वर्ष यह परीक्षा दी और इस प्रकार से बी0ए0 की परीक्षा उत्तीण की।[31]

मालवीय जी को कॉलेज जीवन में कविता करने का शौक उत्पन्न हुआ। वे 'मकरन्द' उपनाम से कविता करते थे। वे भारतेन्दु को

Estelar

अपना गुरू मानते थे।[32] अपनी कविताओं में वे पाश्चात्य संस्कृति का उपहास एवं भारतीय संस्कृति की प्रशंसा किया करते थे। कभी–2 श्रंगार रस की कविता भी करते थे। मदन मोहन द्वारा रचित कुछ पद्य अग्र प्रकार प्रस्तुत है–

अश्लील श्रंगार के सम्बन्ध में मदन मोहन ने लिखा है–

यह रस ऐसो है बुरो, मन को देत बिगारि।
याते पास न आवहु, जेते अहि अनारि।।[33]

उनकी एक रचना से उनकी बाल्यकाल की आन्तरिक भावनाओं और आकांक्षाओं का कुछ परिचय प्राप्त होता है। उन्होंने लिखा है–

गरे जूही के हैं गजरे पड़ा रंगौ दुपट्टा तन।
भला क्या पूछिए धोती तो ढाके से मंगाते हैं।।
कभी हम वारनिश पहनै कभी पंजाब का जोड़ा।
हमेशा पास डंडा है, ये फक्कड़ सिंह गाते हैं।।
न ऊधो से हमें लेना न माधो का हमें देना।
करें पैदा जो खाते हैं और दुःखियों को खिलाते हैं।।
नहीं डिप्टी बना चाहें न चाहें तसिल्दारी।
पड़े अलमस्त रहते हैं युहीं दिन को बिताते हैं।।
न देखे हम तरफ उनकी जो हमसे नेक मुह फेंरे।
जो दिल से महसे मिलते हैं झुक उनको देख जाते हैं।।
नहीं रहती फिकर हमको कि लावें तेल और लकड़ी।
मिले तो हलवे छन जावै नहीं झूरी उड़ाते हैं।।
सुनो यारो जो सुख चाहो तो पचड़े से गृहस्थी के।

Estelar

छुटो फक्ड़पना ले लो यही हम तो सिखाते हैं।।
हमें मत भूलना यारो बसे हम पास 'मनमोहन'।
हुई है देर जाते हैं, तुम्हारा शुभ मनाते हैं।।[34]

राधिका रानी' पर मदन मोहन की लिखी रचना इस प्रकार है–

इन्दु सुधा बरस्यौ नलिनीय पै वे न बिना रवि के हरिखानी।
त्यौं रवि तेज दिखायो तऊ बिनु इन्दु कुमोदिनी ना बिकसानी।।
न्यारी कछु यह प्रीति की रीति नही ''मकरन्दजू'' जात बखानी।
संवरे कामरीवारे गुपाल पै रीझि लटू भई राधिका रानी।।
वे कवते उत ठाढे अहैं इत बैठि अहौ तुम नारि चुपानी।
थाकी तम्हें सुझावत सामते ऐसी मैं रावरी बाति न जानी।।
मेहि कहां पै यहै ''मकरन्द'' हूं जो कहूं खीझि पे रूसन ठानी।
आजि मनाये न मानती हौ कल्ह आप मनाइहौ राधिका रानी।।
मांगत मोतिन माल नहीं नहि मांगत तोसों मैं भोजन पानी।
सारी न मांगत हौं ''मकरन्द'' न थारी अनेक सुगन्धन सानी।।
मांगत हौं अधरा–रस रंचक सोउ न दीजत हौ सनमानी।
सूमता एती तुम्हें नहीं चाहिए बाजति हौ चहूं राधिका रानी।।
धूम मची ब्रजफागुरा आजु बजै उफ झांझ अवरि उड़ानी।
ताकि चलैं पिचका दुहुं और गलीन में रंग की धार बहानी।।
भीजैं भिजोवैं ठढ़े ''मकरन्द'' दुहुं लखि सोभा न जात बखानी।
ग्वालन साथ इतै नन्दलाल उतै संग ग्वालिन राधिका रानी।।

डारन' पर समस्या–पूर्ति इस प्रकार थी–

भूलिहैं सो हंसि मांगिवो दान को रजच दही हित पानि पसारन।

Estelar

भूलिहैं फागु के रागु सबै वह ताकहि ताकि कै कुंकुम मारन।।
से तो भयो सबही ''मकरन्दजू'' दाखि चाखिबै बैर विसारन।
जपर चीर चुराय चढ़े वह भूलिहैं कैस कदम्ब की डारन।।
ढूंढयो चहूं झंझरीन झरोखन ढूढयो किते भर दाव पहारन।
मंजुल कुजन ढूंढि फिरयो पर हाथ मिल्यो न कहूं गिरिधारन।।
लावत नाहि तउ परतीति सह्यो इतनो दुख प्रीति के कारन।
जानत स्यम अजौ उतहि चित्त चौंकत देखि कदम्ब की डारन।।[35]

वे कॉलेज के प्रारम्भिक जीवन में **फक्कड़ सिंह** नाम से कविताएं लिखा करते थे। उनके द्वारा अपनी तथा अपनी साथियों की वेशभूषा के सम्बन्ध में रचित एक पद्य की कुछ पंक्तियां उद्घृत हैं–

गरे जूही के हैं गजरा पड़ा रंगी दुपट्टी तन।
भला क्या पूछिए, धोती तो ढाका से मंगाते हैं।।
कभी हम वारनिश पहने, कभी पंजाब का जोड़ा।
हमेशा पास डंडा है, यह फक्कड़सिंह गाते हैं।[36]

मालवीय जी का शरीर भव्य एवं सुन्दर तथा उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावोत्पादक था। वे न केवल खान–पान में, अपितु रहन–सहन, व्यवहार एवं वेश–भूषा में भी सादगी की मूर्ति थे।[37] वह सिर पर पगड़ी बांधते थे, गले में सफेद दुपट्टा लपेटते थे, जो घुटनों तक पहुंचता था। पैरों में साधारण देशी जूता और हाथ में घड़ी रहती थी। कभी–कभी वे धोती और कभी चूड़ीदार पाजामे को प्रयोग करते थे।[38] उनकी वाणी अत्यन्त मधुर एवं ओजस्वी थी।[39] मालवीय जी की तीव्र इच्छा एम.ए. करने की थी। किंतु उनकी घरेलू आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय थी। यहां तक कि उनकी पत्नी तक को भरपेट भोजन और नई साड़ियों का बड़ा अभाव

Estelar

रहता था। इस बारे में उन्होंने स्वयं लिखा था– ''हम लोग इतने निर्धन थे कि मेरी पत्नी को भरपेट भोजन भी नहीं मिलता था और उन्हें पुरानी थेकली लगी हुई फटी साड़ी पहननी पड़ती थी।'' इसके अतिरिक्त उनकी इच्छा धर्म–कर्म में रूचि होने के कारण अपने पितामह व पिता के समान धार्मिक कार्यो में जीवन समर्पित करने की थी, किन्तु पारिवारिक एवं आर्थिक कारणों से न तो वे एम.ए. कर पाये और न ही धार्मिक महाजनी का पूर्णकालिक कार्य। मालवीय जी ने स्वयं लिखा है– ''बी.ए. पास करने के अनंतर मेरी प्रबल इच्छा थी कि मैं अपने पिता और पितामह के समान व्यास बनकर धार्मिक प्रवचन करूं, किंतु मेरा परिवार निर्धन था और उसके प्रति मेरा कुछ कर्तव्य भी था।'' उन्हीं दिनों जिस विद्यालय में मदन मोहन अध्ययन किया, उसमें अध्यापक का एक स्थान रिक्त हो गया था। वहां मालवीय जी के चचेरे भाई पंडित जयगोविंद जी प्रमुख पंडित थे। उन्होंने मालवीय जी को उस पद के लिए आवेदन करने का परामर्श दिया, किन्तु मालवीय जी ने वह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। यह बात जब पंडित जयगोविंद के द्वारा मालवीय जी की माता को पता चली तो वे मालवीय जी को समझाने के लिए आयी। मालवीय जी ने इस वृतान्त का वर्णन अग्र प्रकार किया है– ''मैंने उनकी ओर देखा। उनकी आंखों से अश्रुधारा बही जा रही थी। मैं अब भी अत्यन्त स्पष्टता के साथ वे करुणापूर्ण आंखें स्मरण कर सकता हूं। मेरी सारी आकांक्षाएं मेरी माताजी के आंसुओं में डूब गयी और मैंने तत्काल उनसे कहा कि बस आप कुछ न कहिए, मैं नौकरी कर लूंगा।''

अतः उन्हें अपने संस्कृत विद्यालय में 40 रुपये मासिक पर संस्कृत अध्यापक की नौकरी स्वीकार करनी पड़ी।[40] जो दो महीने पश्चात् साठ रुपये कर दिया गया।

Estelar

मालवीय जी का विवाह वर्ष 1881[41] में उनके चाचा पंडित गजाधर प्रसादजी के माध्यम से मिर्जापुर के पंडित नन्दलालजी की कन्या कुन्दन देवी हुआ था। उनके विवाह की कथा का संयोग भी विचित्र है। जब मदन मोहन की आयु लगभग सत्रह–अट्ठारह वर्ष थी, तो वे एक सभा में अपने चाचा पं. गदाधर प्रसाद के साथ संस्कृत के विद्वानों की सभा में मिर्जापुर गये थे। वहां उन्होंने ध्यानपूर्वक सभी विद्वानों की विद्वतापूर्ण शास्त्रार्थ सुना। जब सभी लोग अपनी–अपनी बात कह चुके थे तो मदन मोहन की इच्छा भी उस विषय पर दो शब्द कहने की हुई। उन्होंने धीरे से अपने चाचा गदाधर प्रसाद से आज्ञा मांगी। महामना ने अनुमति मिलने पर बोलना प्रारंभी किया तो सभा में शांति छा गई। उन्होंने मधुर स्वर में प्रामाणिक तर्कों के साथ इस प्रकार अपनी बात विद्वानों के सामने रखी कि सभी उपस्थित विद्वान उनकी बात का लोहा मान गए। इस सभा में प्रसिद्ध विद्वान पंडित नंदराम भी उपस्थित थे। सभा समाप्ति पर पंडित नंदराम पंडित गदाधर के पास पहुंचे और उनसे मदन मोहन के रिश्ते की बात चलाई। वास्तव में मदन मोहन के वक्तव्य से बड़े प्रभावित हुए थे। अन्ततः पंडित नंदराम के तीसरी पुत्री कुन्दन देवी का विवाह पंडित ब्रजनाथ के पुत्र मदन मोहन से सम्पन्न हुआ।[42]

मालवीय जी की धर्मपत्नी श्रीमती कुन्दन देवी अत्यन्त समझदार थी। कुन्दन देवी अपनी माता–पिता के दुलार में पढ़ी थी। उन्हें अपने लड़कपन में किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव नहीं हुआ था। ससुराल की दयनीय आर्थिक दशा ने उन्हें बड़े धैर्य और साहस से निर्धनता के कष्ट सहने को बाध्य किया। उन्होंने आधा पेट भोजन करके व फटी धोती पहनकर सन्तोष के साथ महामना का साथ दिया। अतः कुन्दन देवी को पतिदेव का स्नेह का प्राप्त था। उनका मदन मोहन की भांति ही

Estelar

भगवद्भक्ति के प्रति अनुराग था। वे दोनों पति–पत्नी वैवाहिक जीवन के प्रारम्भ से ही रामकृष्ण के उपासक थे। दोनों कोई भी काम भगवान का स्मरण किये बिना नहीं करते थे, चाहे वह काम दूध–चाय पीना हो अथवा कोई अन्य काम क्यों न हो। मदन मोहन की धर्मपत्नी ने अपने पति की ही भांति भगवान की भक्ति में कई दोहे कहे हैं, जिनमें से एक निम्न है–

''ऐसा कोई घर नहीं, जहां न मेरा राम''।

मालवीयजी अपनी पत्नी के स्वभाव व व्यवहार से काफी सन्तुष्ट रहते थे। उन्हें अपनी धर्मपत्नी पर गर्व था।[43] उन्होंने पंडित रामनरेश त्रिपाठी को कहा कि ''वे सदा शान्त और जो कुछ मिल गया उसी में सन्तुष्ट रहने वाली गृहलक्ष्मी हैं।''[44] उन्होंने यह भी कहा कि ''अपनी स्त्री के साथ गृहस्थी का सुख धर्म के अनुसार मनुष्य जितना भोग सकता है, मैंने उतना भोगा।''[45] कुन्दन देवी अपने पति के लिए निश्चय ही बहुत साध्वी और भाग्यशाली सिद्ध हुई। धीरे–धीरे उनके पतिदेव की प्रतिभा का ऐसा विकास हुआ कि उन्हें देश के एक महान् नेता नेता की पत्नी होने का गर्व प्राप्त हुआ। इस दंपति के पांच पुत्र व पांच पुत्रियां उत्पन्न हुई।

Estelar

सन्दर्भः–

1. सिंह, डॉ. राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 42, कुमार एण्ड सन्स, वर्ष 2012
2. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 1, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय संस्करण वर्ष 1989
3. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 68, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996
4. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 4, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय संस्करण वर्ष 1989
5.http://www.iloveindia.com/indian-heroes/madan-mohan-malviya-biography. html
6. पाण्डेय, डॉ. विश्वनाथ, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 8, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, जुलाई 2006
7. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 17, डायमंड पॉकेट बुक्स नई दिल्ली, वर्ष 2008
8. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 14, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष 2006
9. http://www.mapsofindia.com/who-is-who/history/madan-mohan-malviya.html
10. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 14, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष 2006
11. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 4, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय संस्करण वर्ष 1989
12. सिंह, डॉ0 राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 43, कुमार एण्ड सन्स नई दिल्ली, वर्ष 2012
13. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 3, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय संस्करण वर्ष 1989
14. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 15, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष 2006
15. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 15, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण, वर्ष 2013
16. सिंह, डॉ. राजेश, शिक्षा विचारक पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 43, कुमार एण्ड संस, नई दिल्ली

Estelar

17.http://www.iloveindia.com/indian-heroes/madan-mohan-malviya-biography. html
18.http://www.14gaam.com/history-and-biography-of-pandit-madan-mohan-malaviya.htm
19. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीय– जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 33, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
20. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 19, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण, वर्ष 2013
21. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता, भाग–2, पृष्ठ 69, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, वर्ष 1996
22. मिश्र, राजेन्द्र एवं तिवारी, प्रहलाद, भारत के शिक्षाशास्त्री, पृष्ठ 54, पूनम पुस्तक भवन दिल्ली, प्रथम संस्करण वर्ष 2009
23. मिश्र, राजेन्द्र एवं तिवारी, प्रहलाद, विश्व के शिक्षाशास्त्री, पृष्ठ 262, कृतिका बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण वर्ष 2009
24. सिंह, डॉ0 राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 43, कुमार एण्ड सन्स नई दिल्ली, वर्ष 2012
25. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 19, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण वर्ष 2013
26. सिंह, डॉ0 राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 43, कुमार एण्ड सन्स नई दिल्ली, वर्ष 2012
27. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 19, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण वर्ष 2013
28. चतुरसेन, आचार्य, भारत रत्न, पृष्ठ 28, विज्ञान प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 2013
29. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता, भाग–2, पृष्ठ 68–69, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, वर्ष 1996
30. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 18, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष 2006
31.http://www.mapsofindia.com/who-is-who/history/madan-mohan-malviya.html
32. शर्मा, विश्वमित्र, बीसवीं सदी के 100 प्रसिद्ध भारतीय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, वर्ष 2000
33. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीय– जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 29, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
34. चतुर्वेदी, सीताराम, आधुनिक भारत के निर्माता मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 22–23, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, वर्ष 1996

Estelar

35. त्रिपाठी, रामनरेश, मालवीयजी के साथ तीस दिन, पृष्ठ 278–279
36. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 23–24, डायमंड बुक्स दिल्ली, वर्ष 2008
37. पाण्डेय, डॉ. विश्वनाथ, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 5, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, जुलाई 2006
38. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता, भाग–2, पृष्ठ 69, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, वर्ष 1996
39. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 17, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष 2006
40. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता, भाग–2, पृष्ठ 70, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, वर्ष 1996
41. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 71, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996
42. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 18, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण, वर्ष 2013
43. पाण्डेय, डॉ. विश्वनाथ, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 8, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, जुलाई 2006
44. त्रिपाठी, रामनरेश, मालवीयजी के साथ तीस दिन, पृष्ठ 80
45. पूर्वोक्त, पृष्ठ 85

Estelar

श्री मालवीय जी का प्रारम्भिक जीवन परिचय

स) सफल शिक्षक के रूप में मालवीय जी:-

मालवीयजी ने अपनी ममतामयी मां के रूप में कुल की गरीबी के दर्शन किए और मन–ही–मन दलित भारत माता का साक्षात्कार किया। मालवीयजी ने मां के चरणों में मस्तक रख दिया और नौकरी करने का वचन मां को दिया। इस प्रकार मालवीयजी ने अपनी उच्च शिक्षा को बीच में ही छोड़ दिया तथा सन् 1884 में बी0ए0 करने के बाद उसी गवर्नमेण्ट स्कूल में[1], जिसमें वे कभी पढ़े थे, संस्कृत के शिक्षक के तौर पर अपना कैरियर प्रारम्भ किया।[2]

मालवीय जी का प्रारम्भिक वेतन 40 रुपये मासिक था। यह वेतन कालान्तर में 60 रुपये मासिक हो गया था। महमना अपनी अल्प आमदनी का अधिकांश हिस्सा अपनी माता को परिवार के भरण–पोषण के लिए दे देते थे। शेष धनराशि में से दो रुपये मासिक अपनी धर्मपत्नी को निजी खर्च के लिए देते थे। मालवीय जी शिक्षक की नौकरी स्वीकार करने के पश्चात् भी सार्वजनिक कामों के लिए समय निकालते थे तथा अपने

Estelar

मासिक वेतन के एक हिस्से को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सार्वजनिक कार्यों में खर्च कर देते थे।[3]

मालवीयजी की वेशभूषा उनके पेशे के अनुसार ही सरल व साधारण थी। उनकी वेशभूषा में भारतीयता की स्पष्ट झलक दिखायी देती थी। उन्होंने अपनी वेशभूषा विद्यार्थी जीवन में अपनायी थी, जो आजन्म उसी प्रकार बनी रही। वे सामान्यतया श्वेत वस्त्र धारण करते थे, सिर पर पगड़ी बांधते थे और गले में दुपट्टा डालते थे, जो घुटनों तक पहुंचता था। इसके साथ वे सफेद चूड़ीदार पैजामा अथवा कभी–कभी धोती बांधते थे। हाथ में छड़ी रहती थी व पैरों व साधारण देशी जूता पहनते थे। दुपट्टा सामान्यतया सफेद होता था, किन्तु कभी केसरिया भी डाल लेते थे।[4] इस प्रकार उनकी वेशभूषा उनके आचरण के समान ही मर्यादित, धवल व निष्कलंक थी। माथे के केन्द्र पर चन्दन का तिलक उनकी वेशभूषा को पूर्ण करता था।[5]

Estelar

मालवीय जी की वाणी अत्यन्त संतुलित व ओजस्वी थी। मालवीय जी की चार प्रमुख भाषाओं मे गहरी पकड़ थी। वह हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और फारसी में धाराप्रवाह बोल लेते थे। उनका उच्चारण शुद्ध व स्पष्ट होता था। इन भाषाओं पर महामना का पूर्ण अधिकार था।[6] भाषाओं पर अधिकार होना महत्व की बात होती है। इससे जहां स्वयं को सहायता मिलती थी, वहीं छात्रों में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता था। उनकी वाणी में माधुर्य था।[7] वह जिस विषय पर बोलते उसे उचित उदाहरणों, सटीक दृष्टान्तों से समझाते थे[8] कि तो श्रोतागण सुनते रह जाते थे। भाषा के इस प्रकार के ज्ञान व असाधारण अधिकार होने के कारण वे अपने सभी

Estelar

छात्रों और शिक्षक वर्ग के बीच प्रशंसा का पात्र बन गये थे। उन्हें सुनना सदैव आनन्दमय होता था। उनका कण्ठ–स्वर छात्रों को आह्लादित करता था। वह पाठ में आये श्लोकों को सस्वर गाकर पढ़ाते थे। पाठ के मध्य में आई कथाएं मालवीयजी विस्तार से सुनाकर पाठ को रोचक और मनोरंजक बना देते थे। मालवीय जी के छात्र उनके छात्र बहुत प्रसन्न रहते थे।[9]

शिक्षक मदन मोहन को कोमल स्वभाव के अनुशासनप्रिय थे। वे छात्रों के प्रति अत्यन्त उदार थे किन्तु वे अनुशासनहीनता कदापि स्वीकार नहीं करते थे। अनुशासन के विषय में वे अत्यन्त ही सख्त थे। अध्यापक के रूप में उनका भांति–भांति के छात्रों से पाला पड़ता है। उनमें कुछ सुशील और सभ्य होते हैं तो कुछ उच्छृंखल और उद्दण्ड भी होते हैं। उन सबसे कैसे व्यवहार किया जाए और उच्छृंखल छात्रों को किस प्रकार सुमार्ग पर लाया जाए, इसकी कला में वे मालवीय जी प्रवीण थे।[10] वे अपने छात्रों पर पूर्ण नियंत्रण रखते थे। साथ ही वे इतने उदार व सहृदय थे कि जरूरतमंद छात्रों को निःसंकोच सहायता भी करते थे।[11]

अध्यापक के रूप में मालवीय जी की सफलता का मुख्य कारण यह था कि वे अपने विषय की संपूर्ण जानकारी को अच्छी जानकारी का पूर्णतया मन में बिठा लेते थे। वे कक्षा की पठनीय विषयवस्तु का पूर्ण अध्ययन पूर्व में कर लेते थे। मालवीय जी की शिक्षण शैली इतनी सुरूचिपूर्ण थी कि छात्रों को उनका पढ़ाया हुआ पाठ भूले नहीं भूलता था। यथोचित उदाहरणों, सटीक दृष्टान्तों और जीवंत कथाओं द्वारा वे अपने छात्रों को बहुत रोचक ढ़ंग से पाठ पढ़ाते थे। एक बार मालवीय जी द्वारा कक्षा में पढ़ाये हुए पाठ को विद्यार्थियों द्वारा घर जाकर दुहराने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।[12] उनकी कक्षा में दुर्भाग्यवश ही कोई छात्र अनुपस्थित होता था। उनके पास धार्मिक ग्रन्थों का अथाह भण्डार था।[13]

Estelar

इन पुस्तकों का तथा अपने पिता व पितामह से धार्मिक विषय पर प्राप्त ज्ञान का भरपूर उपयोग वे उद्धरणों के रूप में आवश्यकता पड़ने पर करते रहते थे।

एक बार स्थानीय विद्यालय में एक परीक्षा चल रही थी, जिसमें मालवीय जी निरीक्षक बनाये गये थे। परीक्षा कक्ष में उन्होंने एक छात्र को दूसरे छात्र की नकल करते हुए पकड़ लिया। मालवीय जी ने नकलची छात्र को तुरन्त ही परीक्षा कक्ष से उठकर बाहर चलने का आदेश दिया। वह छात्र अत्यन्त ही जिद्दी व उद्दण्ड स्वभाव का था। विद्यालय के प्रायः सभी शिक्षक इस छात्र की उद्दण्डता से भिज्ञ थे। उन्होंने मालवीय जी को इस उद्दण्ड छात्र से बचकर रहने की सलाह थी। किन्तु निर्भीक शिक्षक मदन मोहन ने अपने नियमित कार्यक्रमों में परिवर्तन करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। वे नित्य की भांति अपने समस्त कार्यों का सम्पादन करते रहे। महामना के व्यक्तित्व के आगे उस उद्दण्ड बालक की इतनी हिम्मत न हो सकी कि वह उन्हें कुछ भी बोल सके। किन्तु हताश उद्दण्डी बालक ने अपने उस साथी की, जिसकी कॉपी से वह नकल कर रहा था, पकड़कर अपने घर पर दिन–भर के लिए बन्द कर दिया। मालवीय जी को जब इसका पता लगा तो वे वहां गए और किसी प्रकार कह सुनकर उन्होंने इस छात्र को मुक्त कराया। उन्होंने इस उद्दण्डी को इस प्रकार समझाया कि वह अभिभूत हो गया। मालवीय जी के भव्य व्यक्तित्व और उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने उनके पैरों में पड़कर उनसे क्षमा मांगी।[14] उसने न केवल अपने दुष्कृत्य के लिए क्षमा मांगी, बल्कि भविष्य में इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति करने से भी स्वयं को अलग रखने का वादा किया।[15]

Estelar

मालवीय जी एक आदर्श अध्यापक थे, इनके शिष्य इनका बड़ा आदर करते थे। समाज में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।[16] मालवीय जी के चरित्र में सद्व्यवहार, सहानुभूति और विद्वता के गुणों का समावेश था। उनके चारित्रिक गुणों के कारण छात्र उनका सम्मान करते थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वयं ही कहा है–''जब मैं भारत लौटा तो पहले लोकमान्य तिलक से मिलने गया। वे मुझे हिमालय जितने ऊंचे लगे। मेरे लिए उस ऊंचाई तक पहुंचना संभव नहीं था। फिर मैं श्री गोखले के पास गया। वे मुझे सागर जैसे गहरे लगे। मैं उतनी गहराई तक भी नहीं पहुंच सकता था। अंत में मैं मालवीय जी से मिला। वे मुझे गंगा की धारा की तरह निर्मल और पवित्र लगे। मैंने यह तय किया कि मैं उसी निर्मल धारा में गोता लगाऊंगा।''[17]

जिन छात्रों को उनके शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे उनकी प्रभावशाली वाणी और शिक्षण–कला के कौशल से प्रभावित हुए बिना न रह सके।[18] यहां तक कि मालवीय जी से बैर रखने वाले बिगड़े हुए छात्र भी उनकी प्रशंसा करते हुए नहीं थकते थे।

उनके एक प्रसिद्ध नागरिक छात्र का कहना है कि ''छात्रों के ऊपर स्नेहपूर्ण कृपा का, कोमल व्यवहार का, वाणी के माधुर्य का, तथा उनके आकर्षक व्यक्तित्व का बहुत प्रभाव था।'' मालवीय जी के दृढ़ता समन्वित स्नेह का सभी बहुत सम्मान करते थे।[19]

एक अन्य शिष्य का कथन भी उल्लेखनीय है– ''मैंने अपने छात्र–जीवन में बहुत से अध्यापक देखे। वे सभी अपने विषयों में पूर्ण योग्य थे। उनमें से कई दिग्गज विद्वान थे, परन्तु मालवीय जी के अध्यापन के समक्ष सभी गौण थे।''[20]

Estelar

संक्षेप में, जितना व्यापक सम्मान मालवीय जी को मिला, उतना किसी अन्य अध्यापक को नहीं मिला। मालवीय जी को सुनना छात्रों को बहुत आनन्दित करता था। छात्रों पर मालवीय जी का प्रभाव अद्‌भुत था। पं. मदन मोहन मालवीय की आज्ञा की कोई अवहेलना नहीं कर सकता था।

Estelar

सन्दर्भ:-

1. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीय– जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 35, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
2. Sharma, Anuradha, Indian freedom fighters, Page 169, Kumar Publication House, Delhi, Year 2013
3. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीय– जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 35, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
4. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 23, डायमंड बुक्स दिल्ली, वर्ष 2008
5. http://www.mahamana.org/biography-.html
6. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 19, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण वर्ष 2013
7. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीय– जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 35, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
8. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 20, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष 2006
9. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 9, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय संस्करण वर्ष 1989
10. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 29, डायमंड बुक्स दिल्ली, वर्ष 2008
11. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 22, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण, वर्ष 2013
12. पूर्वोक्त, पृष्ठ 23
13. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 20, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष 2006
14. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 29, डायमंड बुक्स दिल्ली, वर्ष 2008
15. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 22–23, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण, 2013
16. सिंह, डॉ. राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 43, कुमार एण्ड संस, नई दिल्ली, वर्ष 2012
17. https://www.youtube.com/watch?v=h5h0HES_Ydw

Estelar

18. राजस्वी, एम.आई., पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 22, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, छठा संस्करण, 2013
19. लाल, प्रो0 मुकुट बिहारी, महामना मदन मोहन मालवीय– जीवन और नेतृत्व, पृष्ठ 36, मालवीय अध्ययन संस्थान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
20. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 21, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, वर्ष 2006

Estelar